



SHRI DALAVAYI CHALAPATHI RAO

Shri Dalavayi Chalapathi Rao is a renowned artist in the field of Leather puppetry, a shadow puppetry craft in Ananthapur district, Andhra Pradesh. Leather puppet show, a traditional shadow puppetry show is being practiced by him for the last 58 years.

2. Born on 1st January, 1946, in Nimmalakunta, Ananthapur district, Andhra Pradesh, Shri Chalapathi Rao has been from the family of traditional leather puppetry. He learnt the art of leather puppetry at the age of 15 from his father late Shri Khade Rao. He has learned how to make a puppet from leather (processed from skin of goat and sheep), Puppet painting, Puppet designing, and shadow puppetry playing everything from his father. He influenced this art by performing shadow puppetry shows in different parts of the country as well as countries like USA (1991), Germany (1992)), France (1999), Austria (2010), and Brazil (2012). He has also been imparting training in leather puppet making and leather puppetry show (shadow puppetry show) to the people for its development.

3. Shri Chalapathi Rao has made different innovative designs in this field of leather puppetry. Those designs include Lamp shades, Wall Lamps, Door side hangers, Wall Panels, Partitions, and different house decorative items from the leather. Also, he has made Leather puppet designs of characters and stories from the epics like the Ramayana, the Mahabharatha, and also from Bhagavathamahapuranam. The famous characters made out of leather include Rama, Ravana, Sita, Krishna, Bhishma and many others.

4. Shri Chalapathi Rao has made significant contribution towards the development of this craft leather puppetry. He has given about 30 demonstrations in and out of the country and has trained many people under different schemes like "Guru Shishya Parampara", Office of Deputy Commissioner (Handicraft), New Delhi, "Skill Up Graduation Program", Office of Deputy Commissioner (Handicraft), New Delhi & Andhra Pradesh Handicrafts Development Corporation Ltd. (APHDCL). He has also made different designs out of leather in the workshop conducted by Office of Deputy Commissioner (Handicraft), New Delhi & APHDCL. He has participated in exhibitions like Surajkund Mela (Faridabad), Dilli Haat (Delhi), Shilparamam (Hyderabad) for many times.

5. Shri Chalapathi Rao is the recipient of many awards and rewards for his contribution towards the development of the leather puppetry including honorary Shilp Guru Award-2006, Golden Jubilee Award-1997, National Award-1998, Ananthosthavam Reward Certificate-2011, Surajkund Mela Appreciation Certificate-2005, Krishna Mahotsav Appreciation Certificate, Vijayawada-2003, France Appreciation Certificate-1999, Kalanerajanam Appreciation Certificate, Ananthapur-1995, and Germany Appreciation Certificate-1991 etc.





श्री दलवायी चलपति राव

श्री दलवायी चलपति राव आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले की छाया चर्म कठपुतली कला क्षेत्र के एक प्रसिद्ध कलाकार हैं। वे पिछले 58 वर्षों से पारम्परिक छाया चर्म कठपुतली कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।

2. आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के निम्मालाकुंटा में 1 जनवरी, 1946, को जन्मे, श्री चलपति राव पारम्परिक चर्म कठपुतली बनाने वालों के परिवार से हैं। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में अपने पिता स्वर्गीय श्री खादे राव से चर्म कठपुतली की कला सीखी। उन्होंने चमड़े से कठपुतली बनाना (बकरी और भेड़ के चमड़े से), कठपुतली की रंगाई, कठपुतली के निर्माण और छाया कठपुतली नचाना आदि सभी कुछ अपने पिता से सीखा। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में और संयुक्त राज्य अमेरिका (1991), जर्मनी (1992), फ्रांस (1999), ऑस्ट्रिया (2010), और ब्राजील (2012) जैसे देशों में छाया कठपुतली कार्यक्रमों में प्रदर्शन करके इस कला को लोकप्रिय बनाया। वह इस कला के विकास के लिए लोगों को चर्म कठपुतली बनाने और चर्म कठपुतली प्रदर्शन (छाया कठपुतली प्रदर्शन) का प्रशिक्षण भी दे रहे हैं।

3. श्री चलपति राव ने चर्म कठपुतली के क्षेत्र में कई नए डिजाइन तैयार किए हैं। इन डिजायनों में चमड़े के लैम्प शेड्स, वॉल लैम्प, डोर साइड हैंगर्स, वाल पैनल, पार्टीशन और विभिन्न गृह सज्जा सामान शामिल हैं। उन्होंने रामायण, महाभारत और भागवत महापुराण जैसे महाकाव्यों के चरित्रों और कथाओं की भी चर्म कठपुतलियां तैयार की हैं। चमड़े से बनाए गए प्रसिद्ध चरित्रों में राम, रावण, सीता, कृष्ण, भीष्म आदि शामिल हैं।

4. श्री चलपति राव ने इस चर्म कठपुतली कला के विकास में महत्वपूर्ण योग्दान किया है। उन्होंने देश और विदेश में लगभग 30 प्रदर्शनियां आयोजित की हैं और "गुरु शिष्य परम्परा", उपायुक्त (हस्तशिल्प) का कार्यालय, नई दिल्ली, "स्किल–अप ग्रेजुएशन कार्यक्रम", उपायुक्त (हस्तशिल्प) का कार्यालय, नई दिल्ली और आंध्र प्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम लिमिटेड (एपीएचडीसीएल) जैसी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत बहुत से लोगों को प्रशिक्षण भी दिया है। उन्होंने उप–आयुक्त (हस्तशिल्प) का कार्यालय, नई दिल्ली और आंध्र प्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम लिमिटेड द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में चमड़े के अलग–अलग डिजाइन भी बनाए हैं। श्री चलपति राव ने कई बार सूरजकुंड मेला (फरीदाबाद), दिल्ली हाट (दिल्ली), शिल्परामम (हैदराबाद) जैसी प्रदर्शनियों में भाग लिया है।

5. श्री चलपति राव को चर्म कठपुतली के विकास में उनके योगदान के लिए कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें मानद शिल्प गुरु पुरस्कार–2006, गोल्डन जुबली पुरस्कार–1997, राष्ट्रीय पुरस्कार–1998, अंनतोस्तवम पुरस्कार प्रमाण–पत्र–2011, सूरजकुंड मेला प्रशंसा प्रमाणपत्र–2005, कृष्णा महोत्सव प्रशंसा प्रमाणपत्र, विजयवाड़ा–2003, फ्रांस प्रशंसा प्रमाणपत्र–1999, कलानिरंजनम प्रशंसा प्रमाणपत्र, अनंतपुर–1995 और जर्मनी प्रशंसा प्रमाणपत्र–1991 आदि शामिल हैं।